International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

'अवकाश–प्राप्त व्यक्तियों की समस्याएं'

(शिकोहाबाद (उ0प्र0) नगर के विशेष सन्दर्भ में)

पर्यवेक्षक
डॉ0 सन्तोष कुमार यादव
अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग
जे0एस0 विश्वविद्यालय शिकोहाबाद (फिरोजाबाद)

देववृत यादव
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग
जे0एस0 विश्वविद्यालय
शिकोहाबाद (फिरोजाबाद)

आधार पीठिका :

'अवकाश–प्राप्ति' किसी भी सेवारत व्यक्ति का अपनी सेवा से विरत/सेवामुक्त हो जाना है जो एक जटिल अवस्था है क्योंकि अनेक समस्याएं अवकाश प्राप्त व्यक्ति को अचानक घेर लेती हैं जिसके फलस्वरूप व्यक्ति अपने परिवार, समुदाय तथा समाज से सामंजस्य करने में असफल पाता है। स्वामीनाथन[1] (2007) ने लिखा है कि इस दशा में बीमारियाँ व्यक्ति को निरापद रूप से जकड़ लेती हैं, साथ ही सेवा से विरत हो जाना, एकाकीपन एवं अलगाव, सामजंस्य स्थापित करने में कठिनाईयाँ, खाली समय का रचनात्मक उपयोग न हो पाना तथा स्वयं व आश्रितों के पोषण हेतु अपर्याप्त आय, मानसिक अन्तर्द्वन्द्व, सत्ता एवं प्रभाव प्रताप में कमी, अन्तः क्रियात्मक समस्याएं, अन्तर पीढ़ी संघर्ष परिजनों द्वारा उपेक्षा किया जाना आदि प्रमुख हैं, चौधरी वीरेन्द्र[2] (2011) की मान्यता है कि सेवानिवृत्तों की प्रमुख समस्यान्तर्गत, शारीरिक अक्षमता, नई पीढ़ी द्वारा उनकी अनदेखी व उपेक्षा करना, उनके अनुभवों का लाभ न लेने व परामर्श न लेने एवं तनाव इत्यादि हैं। लेकिन ऊषा डी0आर0[3] (2019) ने सेवानिवृत्ति की समस्याओं को प्रायः सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, मनोसामाजिक, शारीरिक व स्वास्थ्य सम्बन्धी, पर्यावरणीय, समय व्यतीत करने एवं सामंजस्य सम्बन्धी बताया है।

शोध–उद्देश्य :

प्रस्तावित शोध–पत्र का उद्देश्य 'अवकाश–प्राप्त व्यक्तियो ' की समस्याओ ' का अध्ययन करना' है।

अध्ययन पद्धति :

(क) **'अध्ययन क्षेत्र'** के रूप में फिरोजाबाद जिले की तहसील शिकोहाबाद से नगर शिकोहाबाद को चुना गया है जो न अधिक सीमित है, और न विस्तृत।

(ख) **'अध्ययन पद्धति'** के रूप में 'साक्षात्मकार–अनुसूची' और प्रविधि के रूप में साक्षात्कार की प्रत्यक्ष पूछताछ प्रविधि तथा प्रत्यक्ष निरीक्षण को अपनाया है ताकि प्राथमिक तथ्यों का संकलन मौलिक रूप में किया जा सके। गुडे एण्ड हाट[4] (1960) की मान्यता है कि "प्रत्येक अध्ययन निरीक्षण से आरम्भ होता है और अन्ततः निष्कर्ष के लिए निरीक्षण पर ही लौटना पड़ता है।" इसीलिए निरीक्षण प्रविधि अपनायी है।

(ग) **न्यादर्श चयन** : अध्ययन को सम्पादित करने के लिए शोधार्थी द्वारा वर्ष 2019 में दबरई (फिरोजाबाद) कोषागार से पेंशन प्राप्त करने वाले अवकाश प्राप्त व्यक्तियों में से 300 पेंशन प्राप्त कर्ताओं का चयन संयोग न्यादर्श की लाटरी विधि से किया गया है। ताकि सूचनादाताओं का निष्पक्ष तथा मिथ्याझुकाव रहित चुनाव सम्भव हो सके।

तथ्य–संकलन, सर्वेक्षण विधि से करके निष्कर्षों की स्थापनाएं विश्लेषणात्मक पद्धति से की गयीं हैं ताकि वैज्ञानिक निष्कर्षों की स्थापनाएं तार्किक ढंग से की जा सकें। निष्कर्षों की प्रस्तुति वर्णनात्मक शोध प्रारूप अनुसार की गयी है जिसमें आगमनात्मक पद्धति को अपनाया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक तथ्यों पर आधारित आनुभविक समाजशास्त्रीय है।

तथ्य संकलन :

तथ्यों का संकलन करने के लिए अनुसूची को दो भागों में वर्गीकृत किया गया : (1) सामाजिक समस्याएं, (2) आर्थिक व अन्य समस्याओं से सम्बन्धित प्रश्न बहु विकल्पीय निर्मित किए गए ताकि शारीरिक, मानसिक, पर्यावरणीय तथा आर्थिक समस्याओं का गहन अध्ययन किया जाना सम्भव हो सके। प्राप्त तथ्यों पर अग्रांकित तालिकाएं प्रकाश डालती है :

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

तालिका नं0 (1) : सामाजिक समस्याओं की अवकाश प्राप्त व्यक्तियों द्वारा अनुभूतियाँ

क्रम	सामाजिक समस्याए	सूचनादाताओं की आवृत्तियाँ / प्रतिशत				
		हाँ	नहीं	उदासीन	अनुत्तरित	योग
1.	एकाकीपन अनुभव करना	180 (60.00)	25 (08.33)	95 (31.67)	—	300 (100.00)
2.	अलगाव अनुभव करना	207 (69.00)	—	90 (30.00)	03 (01.00)	300 (100.00)
3.	अपनत्व की कमी की अनुभूति	248 (82.67)	20 (06.67)	32 (10.66)	—	300 (100.00)
4.	परिजनों द्वारा अनदेखी करना	270 (90.00)	06 (02.00)	24 (08.00)	—	300 (100.00)
5.	परिजनों द्वारा उचित सम्मान न दिया जाना	300 (100.00)	—	—	—	300 (100.00)
6.	सामाजिक गतिविधियों से पृथकता की अनुभूति करना	183 (61.00)	36 (12.00)	79 (26.33)	02 (00.67)	300 (100.00)
7.	सामाजिक दूरी अनुभव करना	225 (75.00)	10 (03.33)	65 (21.67)	—	300 (100.00)
8.	सत्ता एवं प्रभाव में कमी आ जाना	300 (100.00)	—	—	—	300 (100.00)
9.	परिजनों के साथ अन्तः क्रियाओं में कमी की अनुभूति	249 (83.00)	11 (03.67)	37 (12.33)	03 (01.00)	300 (100.00)
10.	पारिवारिक गतिविधियों के साथ लगाव पूर्ववत न होना	255 (85.00)	—	45 (15.00)	—	300 (100.00)

तालिका (1) के प्राथमिक तथ्यों से स्पष्ट है कि अध्ययन किए गए कुल 300 अवकाश प्राप्त व्यक्तियों में से 60% एकाकीपन की अनुभूति करते हैं, 69% अलगाव, 82.67% अपनत्व की कमी, 90% परिजनों द्वारा अनदेखी करना, 100% उचित सम्मान न दिया जाना, 61% सामाजिक गतिविधियों से पृथकता अनुभव करना, 75% सामाजिक दूरी अनुभव करना, शत प्रतिशत सत्ता व प्रभाव में कमी अनुभव करना, 83% परिजनों के साथ अन्तः क्रियाओं में कमी की अनुभूति करना, उपेक्षित अनुभव करना तथा 85% पारिवारिक गतिविधियों में लगाव पूर्ववत न होना की अनुभूतियाँ करते हैं। स्पष्ट है कि तालिका में निर्दिष्ट सामाजिक समस्याएं अवकाश प्राप्त व्यक्तियों को सालती रहती हैं। निम्न तालिका (2) आर्थिक व अन्य समस्याओं पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है :

तालिका नं0 (2) : अवकाश प्राप्त व्यक्तियों द्वारा आर्थिक व अन्य समस्याओं की अनुभूतियाँ

क्रम	समस्याओं की अनुभूतियाँ	अवकाश प्राप्तों की आवृत्तियाँ / प्रतिशत		
		हाँ	नहीं	उदासीन
1.	आर्थिक	285(95.00)	15(05.00)	—(00.00)
2.	शारीरिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी	300(100.00)	—(00.00)	—(00.00)
3.	मानसिक तनाव	213(71.00)	60(20.00)	27(09.00)
4.	सम्पत्ति की सुरक्षा व देखरेख सम्बन्धी	240(80.00)	—(00.00)	60(20.00)
5.	परिजनों द्वारा उनकी दक्षता, बौद्धिकता तथा अनुभवों का लाभ न लेना	219(73.06)	63(21.00)	18(06.00)
6.	नई पीढ़ी के लोगों द्वारा परामर्श / विचार-विमर्श न करना	194(68.00)	15(05.00)	81(27.00)
7.	अवकाश प्राप्तों की इच्छाओं / भावनाओं को न जानना	183(61.00)	78(26.00)	39(13.00)
8.	परिवार में महत्व कम हो जाना	249(83.00)	24(08.00)	27(09.00)
9.	पराश्रितता की अनुभूति करना	272(90.67)	28(09.33)	—(00.00)
10.	पोषणीय समस्याएं	195(65.00)	102(34.00)	03(01.00)
11.	अकेलापन व अनावश्यकता की भावनाएं	224(74.67)	—(00.00)	76(25.33)
12.	सत्ता का युवाओं के हाथ हस्तान्तरण	261(87.00)	—(00.00)	39(13.00)
13.	परिजनों द्वारा अन्तः क्रियाएं कम करना	186(62.00)	96(32.00)	18(06.00)
14.	समय कैसे काटें? आदि	208(69.33)	45(15.00)	47(15.67)

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

प्रस्तुत तालिका (2) की 'हाँ' की आवृत्तियाँ/प्रतिशतताएं यह दर्शाती है कि अवकाश प्राप्त व्यक्तियों को उक्त समस्याएं प्रतिपल सालती रहती है इस तथ्य की पुष्टि निम्न सांख्यकीय परीक्षण से भी होती है :

तालिका नं0 (3): क्या आपको तालिका (1) तथा तालिका (2) में निर्दिष्ट समस्याएं अनुभव होती हैं?

क्रम	उक्त समस्त समस्याएं अनुभव होती हैं	सूचनादाता		योग
		पुरूष	महिलाएं	
1.	हाँ	179_A	61_B	240
2.	नही	41_C	19_D	60
	समस्त	220	80	300

आकस्मिकता गुणांक (Q) $= \frac{AD-CB}{AD+CB} = \frac{179\times19-41\times61}{179\times19+41\times61}$

$= \frac{3401-2501}{3401+2501} = \frac{900}{5902}$

$= (+)0.1525$

आकस्मिकता गुणांक का मान धनात्मक प्राप्त हुआ है जो यह दर्शाता है कि अवकाश प्राप्त व्यक्तियो को उक्त दोनो तालिकाओं (1) तथा (2) में निर्दिष्ट समस्याएं सालती हैं।

References :

1. Swaminathan P.C.; Retired Persons and their Problems : An Empirical Psychological Study, Inter Natioanl Journal of Psychology (IJP), New Delhi, 2007, 3(56-62).
2. Chaudhari Birendra; Retirement : A Problem for the Indivisual and their Family, Nation Journal of Social Science, Tagore Marg Calcutta, 2011, Vol. 17, p-30-38.
3. Usha D.R.; The Problems of Aging i.e, A Sociological Study of Retireds, Asian Journal of Social Sciences (AJSS) New Delhi, Jawahar Nagar, 2019, Vol. 32, p.5- 11.
4. Goode W.J. & Hatt P.K.; Methods of Research, Mc-Graw Hill Book co. New York, 1960, p-56.

❖❖❖❖❖